अर्चना अग्रवाल

अष्टमगत लग्नेश के शुभाशुभ फल और उपाय

अष्टम भाव :

यह त्रिक–भावों (VI, VIII, XII) में से एक है और कुंडली का रन्ध्र स्थान या सर्वाधिक अशुभ स्थान है।

अष्टम भाव के कुछ महत्त्वपूर्ण कारकत्व : रहस्यमयी प्रवृति, पैतृक सम्पत्ति, गूढ़ ज्ञान, खुफिया विभाग, अनुसंधान संबंधित कार्य, इंजीनियरिंग, मृत्युभाव, भाग्य का व्यय भाव, स्त्री के लिए मांगल्य भाव, पिता का व्यय भाव, जीवन में विषम परिस्थितियाँ, अनावश्यक चिन्ताएं आदि।

लग्नेश :कुंडली में कितने भी योग–राजयोग हों, परन्तु यदि लग्न–लग्नेश ही सक्षम न हों तो जातक को उनका लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। यह तो कुछ इस प्रकार हुआ, जैसे सावन का सुन्दर मौसम हो और मेघ भी बरसने के लिए तैयार हों, परन्तु हम अस्पताल में भर्ती हों।

शुभाशुभ फल : ज्योतिष का एक सामान्य नियम है कि लग्नेश जिस भी भाव में स्थित होता है, वह उस भाव के फलों में वृद्धि करता है। अर्थात् लग्नेश की अष्टमगत स्थिति जातक को अष्टम भाव से संबंधित शुभ फल प्रदान करेगी। फलों की मात्रा का अनुमान लग्नेश और चन्द्र के बल से स्पष्ट हो जाता है।

शुभाशुभ फल : लग्नेश यदि अष्टम भाव में हो, जातक को निम्न प्राप्त होते हैं :

- माता–पिता से सम्पत्ति प्राप्त होती है।
- जातक रहस्यमयी प्रवृति का होता है और वह अपने मन की वृति बहुत कम स्थितियों में साझा करता है।
- जातक सबको अपने अनुसार चलाना चाहता है, परन्तु स्वयं किसी के अनुसार चलने के लिए तैयार नहीं होता।
- जातक बहुत साहसी होता है, चाहे लग्नेश शुभ ग्रह हो या अशुभ ।
- व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर, ऐसे जातक को परिवार में विशेष स्नेह प्राप्त होता है। जैसे 4 बेटियों के बाद का बेटा होने से या 10–15 वर्षों के बाद की संतान होने से या इकलौती संतान होने से।
- जातक अहंकारी स्वभाव का होता है। यदि जीवन में निर्णय गलत भी हो जाते हैं, तो भी जातक अपने निर्णय को सही ही मानता है।
- जातक के अधिक प्रेम–प्रसंग होने की सम्भावना होती है।
- पिता से वैचारिक मतभेद होते हैं।
- जातक यदि पुरूष है तो उसकी पत्नी कार्यशील होती है।
- बड़े पारिवारिक सदस्य जातक के परिवार का ध्यान रखते हैं।
- जातक की आध्यात्मिक यात्रा 35 वर्ष के बाद आरम्भ होती है।
- 35 वर्ष की आयु के बाद सांसारिक जिम्मेदारियाँ उठाने में जातक की रूचि कम हो जाती है।
- समाज में कम आदर और मान–सम्मान से जातक बहुत चिंतित होता है।
- यदि लग्नेश शुभ ग्रह है तो जातक के पिता मंहगी वस्तुओं का उपभोग करते होंगे। यदि लग्नेश पाप ग्रह है, तो जातक के पिता के खर्चे अनावश्यक रूप से अधिक होंगे।

उपाय : पूजा, मन्त्र, जप की उपयोगिता अपने स्थान पर है, किन्तु देश–काल के अनुसार जातक की मूल आदत पर कार्य करने से स्थायी लाभ प्राप्त होता है :

- जातक को बचपन से ही अपने नित्य काम स्वयं करवाने की आदत डालें।

- जातक को खाना बनाना सीखाएं।
- जातक के साथ खेलें और इनको अपनी हार को सकारात्मक रूप से स्वीकार करना सीखाएं।
- जातक को समझाएं कि महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए अपने किसी परिचित की सलाह अवश्य लें।
- जातक को कोई भी ऐसा शैक्षिक या पारिवारिक कार्य करवाने की आदत डाले जिसमें निरन्तरता हो, क्योंकि जातक में धैर्य कम होता है।
- जातक को बचपन से ही कटुवचन बोलने से बिलकुल रोके।
- जातक को समझाएं कि परिश्रम ही सफलता की एकमात्र कुंजी होती है।

उदाहरण

उदाहरण 1–04–09–1964, 13:45 बजे, कोटा (राजस्थान)

लग्नेश मंगल अष्टम भाव में, शत्रुक्षेत्री, राहु से निकट डिग्री पर युति और शुभ प्रभाव रहित। अर्थात् निर्बल

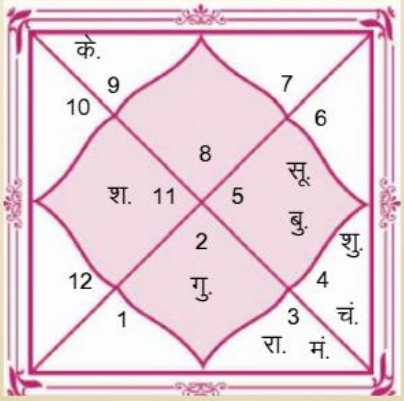

लग्नेश। चन्द्र पक्षबल में निर्बल है। शनि से शश योग है और दशमेश सूर्य स्वराशि व दिग्बली होकर बली है।

जातक परिवार में लाडला है, 45 की आयु आते–आते इन्होने आजीविका कमाना छोड़ दिया। इनकी पत्नी कार्य करती हैं। इनके पिताजी भी इनके परिवार की जिम्मेदारी उठाते हैं। जातक को ब्रह्मकुमारी जाने से शान्ति महसूस होती है। निर्बल लग्नेश होने के कारण जातक के स्वप्रयास अल्प रहे। निर्बल लग्नेश और निर्बल चन्द्र के कारण शश महापुरूष योग फलित नहीं हुआ। मंगल की दशा आते ही इनका जीवन उथल–पुथल हो गया।

उदाहरण 2 – 17–11–1981, 17 बजे, दिल्ली।

लग्नेश अष्टम भाव में, लग्नेश शुक्र का षष्टेश बृहस्पति से भाव परिवर्तन,

पक्षबली चन्द्र परन्तु राहु युत और लग्न पर सूर्य का प्रभाव है।

जातक 4 बहनों के बाद पुत्र संतान है और इसे परिवार में बचपन से ही विशेष स्नेह मिला। लग्नेश पर बृहस्पति के प्रभाव से कम आयु में ही नौकरी की और अच्छा मान–सम्मान प्राप्त किया। जीवन में उचाईयाँ और संघर्ष दोनो ही लग्नेश शुक्र की महादशा में मिले। इन्होने नौकरी छोड़कर व्यवसाय किया जो गलत साबित हुआ और इनका जीवन संघर्षमय हो गया। लग्नेश पर पाप प्रभाव की कमी के कारण जातक ने स्वप्रयास से ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया। जातक की पुत्री, पत्नी और माता ने इनका बहुत साथ दिया।

उदाहरण 3–

20–05–2019, 18:58 बजे, दिल्ली।

यह जातक (पुत्र) इनके परिवार में

18 वर्ष बाद हुआ है और इकलौती सन्तान है।

निष्कर्ष : अष्टमगत लग्नेश के अशुभ प्रभाव को क्षीण करने के लिए बचपन से ही विशेष पूजा करवानी चाहिए और इनके माता–पिता को एक विशेष पालन–पोषण पद्धति अपनानी चाहिए।

पता : ए–7, ग्राउंड फ्लोर, सुभाष पार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली–110059
फोन – 9871063439

उदाहरण 4– 27–05–1996,